सत्यमेव जयते
Ministry of Youth Affairs & Sports
Government of India

क्रीड़ा-भारती

लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान
एवं
क्रीड़ा भारती
के संयुक्त तत्वावधान में

खेलों की सृष्टि में भारतीय दृष्टि
भारतीय खेल परंपरा: दर्शन, विज्ञान एवं विकास
विषय पर आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दिनांक 20-21 फरवरी 2026

मुख्य संरक्षक
डॉ. मनसुख मण्डावीया
माननीय मंत्री
युवा कार्यक्रम और खेल, भारत सरकार

संरक्षक एवं मुख्य अतिथि
श्रीमती रक्षा निखिल खडसे
माननीय राज्य मंत्री
युवा कार्यक्रम और खेल, भारत सरकार

सह-संरक्षक
श्री हरी रंजन राव, IAS
सचिव (खेल)
एवं महानिदेशक, भारतीय खेल प्राधिकरण

विशिष्ट अतिथिगण

श्री राज चौधरी
अखिल भारतीय राष्ट्रीय महामंत्री
क्रीड़ा भारती

श्री प्रसाद महानकर
अखिल भारतीय संगठन मंत्री
क्रीड़ा भारती

समन्वयक
प्रो. कल्पना शर्मा
कुलपति, एल.एन.आई.पी.ई.

सह-समन्वयक
प्रो. यतेन्द्र कुमार सिंह
कुलसचिव, एल.एन.आई.पी.ई.

संस्थान परिचय

LNIPE की स्थापना अगस्त 1957 में भारत सरकार के शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय द्वारा पहले स्वतंत्रता संग्राम के शताब्दी वर्ष में लक्ष्मीबाई कॉलेज ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन (LCPE) के रूप में की गई थी। ग्वालियर में स्थित, जहाँ रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 में बहादुरी से लड़ाई लड़ी थी, इस संस्थान की स्थापना पद्म श्री डॉ. पी.एम. जोसेफ के दूरदर्शी नेतृत्व में हुई थी।

शुरुआत में विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन और बाद में जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (1964) से संबद्ध, इस संस्थान को 1973 में राष्ट्रीय महत्व का संस्थान घोषित किया गया और इसका नाम बदलकर लक्ष्मीबाई नेशनल कॉलेज ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन (LNCPE) कर दिया गया। शारीरिक शिक्षा और खेल में इसके अद्वितीय योगदान को पहचानते हुए, भारत सरकार ने 1982 में इसे जीवाजी विश्वविद्यालय के तहत स्वायत्त दर्जा दिया।

1995 में, इसके अग्रणी योगदानों को स्वीकार करते हुए, LNCPE को UGC अधिनियम, 1956 की धारा ३ के तहत सम विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। इसका नाम बदलकर लक्ष्मीबाई नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ फिजिकल एजुकेशन (LNIPE) कर दिया गया और यह भारत में शारीरिक शिक्षा और खेल के लिए समर्पित एकमात्र सम विश्वविद्यालय है, जो दक्षिण पूर्व एशिया में एक विशिष्ट स्थान रखता है।

क्रीड़ा भारती परिचय

क्रीड़ा भारती एक राष्ट्रवादी समाजिक संगठन है, जो खेलों को संस्कार, सेवा और समर्पण से जोड़कर देखता है। इसका मानना है कि खेल केवल पदक जीतने का साधन नहीं, बल्कि समाज निर्माण और राष्ट्र निर्माण का प्रभावी माध्यम है। यह संगठन खिलाड़ियों में अनुशासन, देशभक्ति, नैतिकता, सहयोग और नेतृत्व क्षमता का विकास करता है। क्रीड़ा भारती भारतीय संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के अनुरूप खेल गतिविधियों को संचालित करती है।

स्थापना एवं पृष्ठभूमि

- स्थापना वर्ष १९९२, हनुमान जयंती पर
- स्थापना स्थान: पुणे
- नारा: ''क्रीड़ा से राष्ट्र निर्माण''
- कार्य क्षेत्र: अखिल भारतीय स्तर (राज्य, जिला, प्रखंड/तहसील तक)

क्रीड़ा भारती द्वारा स्थापित मुख्य कार्य जैसे - हनुमान जन्म उत्सव समारोह का आयोजन, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस २१ जून, राष्ट्रीय खेल दिवस २९ अगस्त, जीजा माता सम्मान समारोह का आयोजन, क्रीड़ा ज्ञान परीक्षा का आयोजन हैं।

क्रीड़ा भारती के प्रमुख उद्देश्य (विस्तार से)

१. खेल के माध्यम से राष्ट्र निर्माण
खेलों के जरिए युवाओं में राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना और कर्तव्यबोध विकसित करना।

२. नैतिक एवं चारित्रिक विकास
खिलाड़ियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, आत्मसंयम, सहनशीलता और त्याग की भावना विकसित करना।

३. स्वदेशी खेलों का उत्थान
कबड्डी, खो-खो, मलखंब, कुश्ती, योग, तीरंदाजी जैसे भारतीय खेलों को पुन: लोकप्रिय बनाना।

४. खिलाड़ी का सर्वांगीण विकास जैसे - शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक विकास सुनिश्चित करना।

५. खेलों का सामाजिककरण
खेलों को केवल प्रतियोगिता तक सीमित न रखकर समाज सेवा और सामाजिक सुधार से जोड़ना।

६. ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में खेल विकास
ग्रामीण युवाओं और प्रतिभाओं को मंच प्रदान करना तथा खेल सुविधाओं का विस्तार करना।

७. व्यवसायीकरण के संबंध में
खेलों को केवल धन, पुरस्कार और प्रसिद्धि तक सीमित न रखकर सेवा भाव को प्राथमिकता देना।

संगोष्ठी परिचय

भारत में खेलों की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। यह परंपरा केवल मनोरंजन तक सीमित न रहकर, व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक और सामाजिक दक्षता के विकास में सहायक रही है। आज तकनीकी युग में पारंपरिक खेल, लोक कलाएं, शारीरिक व्यायाम पद्धतियां एवं भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण पुन: महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं।

''खेल सृष्टि - भारतीय दृष्टि'' विषयक यह संगोष्ठी श्रृंखला, मध्यप्रदेश के प्रमुख विश्वविद्यालयों में आयोजित की जाएगी, जिसका उद्देश्य पारंपरिक खेल संस्कृति की पुनर्स्थापना और उसके आधुनिक संदर्भ में पुनरावलोकन करना है।

वैदिक काल में खेलों को 'साधना' और 'संस्कार' का स्वरूप माना गया। उस समय खेल केवल मनोरंजन नहीं थे, बल्कि युद्ध प्रशिक्षण, स्वास्थ्यवर्धन और सामाजिक सामंजस्य के साधन भी थे। वैदिक साहित्य, महाभारत, रामायण और अन्य ग्रंथों में विविध खेलों का उल्लेख मिलता है, जो उस युग की समृद्ध खेल संस्कृति को दर्शाते हैं।

संगोष्ठी उद्देश्य

- भारत के पारंपरिक खेलों एवं व्यायाम पद्धतियों के इतिहास पर प्रकाश डालना ।
- भारतीय लोक परंपराओं द्वारा शारीरिक एवं मानसिक दक्षता के विकास को समझना ।
- खेलों में भारतीय नैतिक मूल्यों, आचरण, तथा प्रबंधन दर्शन को रेखांकित करना।
- ई-खेल और आधुनिक जिम प्रणाली के भारतीय संदर्भ में भविष्य का मूल्यांकन ।
- खेल मनोविज्ञान, पोषण एवं प्रशिक्षण के भारतीय संदर्भ को सामने लाना।

संगोष्ठी विशेषता

- पैनल चर्चा
- शोध पत्र प्रस्तुति
- खेल प्रदर्शन
- स्वदेशी खेलों की कॉफी टेबल बुक विमोचन
- स्वाधीनता के पूर्व की व्यायाम, खेल तथा शारीरिक अभ्यास विषयक पुस्तिका विमोचन
- पंरपरागत खेल पोस्टर प्रदर्शनी

विषय क्षेत्र

- भारत के पारंपरिक खेलों का इतिहास, सामाजिक योगदान तथा वर्तमान में प्रचलित पारंपरिक खेल।
- लोक कला एवं लोक परंपराओं के माध्यम से शारीरिक दक्षता।
- पोषण, आहार एवं भारतीय परंपरा।
- खेल आयोजन एवं व्यवस्थापन में भारतीय दर्शन।
- खिलाड़ी और प्रशिक्षकों के आचरण में भारतीय मूल्य एवं नैतिकता।

मुख्य वक्ता

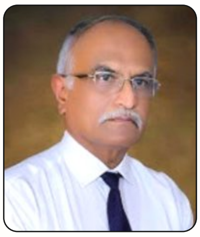

डॉ. अनिल करवंदे
पूर्व पाधानाचार्य
IDCPE, नागपुर

डॉ. अजीत कुमार
सहायक आचार्य,
संस्कृत विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. वाणी भूषणम
वैज्ञानिक अधिकारी
खाद्य एवं पोषण,
SAI, NCSSR, नई दिल्ली

आयोजन समिति

आयोजन सचिव

डॉ. नीबू आर. कृष्णा
सह-आचार्य
संपर्क : 9425712188

-: संयुक्त आयोजन सचिव :-

डॉ. नरेन्द्र यादव
सहायक आचार्य
संपर्क : 9996963855

डॉ. पायल दास
सहायक आचार्य
संपर्क : 7067037789

ई-मेल : bkpdvv2026@lnipe.edu.in

सलाहकार समिति

- श्री भीष्म सिंह राजपूत (अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य, क्रीड़ा भारती)
- श्री अनंत डीके (क्षेत्र संयोजक, मध्य क्षेत्र)
- श्री दीपक सचेती (अध्यक्ष, मध्यप्रदेश समिति, क्रीड़ा भारती)
- डॉ. अनिल करवंदे (पूर्व प्रधानाचार्य, IDCPE, नागपुर)
- प्रो. एम.के. सिंह (परीक्षा नियंत्रक, LNIPE)
- प्रो. जोसेफ सिंह (अधिष्ठाता, शैक्षणिक एवं शारीरिक शिक्षा व संबद्ध क्षेत्र, LNIPE)
- डॉ. शंकर ज्योति बासुमतारी (अधिष्ठाता, LNIPE उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटी)
- डॉ. बीरेन्द्र झाझड़िया (अधिष्ठाता, खेल विज्ञान संकाय, LNIPE)
- प्रो. विनीता बाजपेयी मिश्रा (विभागाध्यक्ष, क्रीड़ा जैवयांत्रिकी, LNIPE)
- प्रो. सी.पी. सिंह भाटी (विभागाध्यक्ष, योग विज्ञान, LNIPE)
- डॉ. भारत वर्मा (विभागाध्यक्ष, खेल मनोविज्ञान, LNIPE)
- डॉ. बृजकिशोर प्रसाद (विभागाध्यक्ष, स्वास्थ्य विज्ञान, LNIPE)
- डॉ. आशीष फुलकर (विभागाध्यक्ष, खेल प्रबंधन एवं प्रशिक्षण, LNIPE)

पंजीकरण विवरण

बाह्य प्रतिभागी/शोधार्थी (आवास सुविधा के साथ)	–	रू. 1000/–
बाह्य प्रतिभागी/शोधार्थी (बिना आवास सुविधा)	–	रू. 800/–
एल.एन.आई.पी.ई. के शोधार्थी	–	रू. 500/–
एल.एन.आई.पी.ई. के विद्यार्थी	–	रू. 200/–

चयनित शोध पत्र ISBN के साथ Proceedings में प्रकाशित किये जायेंगे

पंजीकरण की अंतिम तिथि	–	14.02.2026
पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि	–	16.02.2026

पंजीयन के लिये
स्कैन करें

एल.एन.आई.पी.ई. गीत

नयी जवानी, नयी रवानी, नयी कहानी लाये हैं।
शक्ति नगर के सेनानी हम हंसते गाते आये हैं।
नयी जवानी जिन्दाबाद, नयी रवानी जिन्दाबाद,
नयी कहानी जिन्दाबाद, ये सेनानी जिन्दाबाद,
ये बलिदानी जिन्दाबाद।
एक समन्दर की लहरें हम, एक गगन के तारे हैं,
लौह–लाड़ले लक्ष्मी के हम, धरती के अजियारे हैं,
एक धर्म है, एक ध्येय हैं, सब जलते अंगारे हैं,
नये देश के निर्माता हम, भारत के रखवारे हैं, हम (2)
अनुशासन में कुन्दन बन कर नये जवानों रे,
अनुशासन में कुन्दन बनकर हमने कदम बढ़ाये हैं,
लो शक्ति नगर के सेनानी हम, हंसते गाते आये हैं।।
पूरब पश्चिम मिले हमारे, खेलों में मैदानों में,
गीत अमन के थिरक रहे हैं, देखो इन मुस्कानों में,
राह बनाते हैं, अपनी हम, आंधी में तूफानों में,
नयी जिन्दगी भर देंगे हम, दुनियां के इंसानों में। हम (2)
मानवता के आव्हानों को नये जवानों रे,
मानवता के आव्हानों को हमने शीश चढ़ायें हैं,
लो शक्ति नगर के सेनानी हम हंसते गाते आये हैं। (2)
नये देश की नैया हम सब, मंजिल तक ले जायेंगे,
आने वाले सांझ–सबेरे, गीत हमारे गायेंगे,
इसी तरह से कदम बढ़ेंगे, इस तरह मुस्कायेंगे,
वक्त पड़ा को आजादी पर, हंसकर शीश चढ़ायेंगे। हम (2)
खून पसीना देकर हमने, नये जवानों रे,
खून पसीना देकर हमने, लाखों चमन खिलायें हैं,
लो शक्ति नगर के सेनानी हम हंसते गाते आये हैं। (2)
सभी बराबर सभी सरीखे, क्या गोरा क्या काला रे,
दिशा–दिशा में गूंज रहा है, आज हमारा नारा रे,
इसी शान से फहरायेगा, झण्डा सदा हमारा रे। झण्डा (2)
बलिदानी इतिहास हमारे, नये जवानों रे,
बलिदानी इतिहास हमारे, हमने नहीं भुलाये हैं,
लो शक्ति नगर के सेनानी हम हसंते गाते आये हैं। (2)
शरीर माद्यम् खलु धर्म साधनम्

शैक्षणिक भागीदार :-

क्रीड़ा भारती गीत

खेल खिलाडी खेल
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
हसकर, मिलकर, डटकर, बढकर हसकर,
मिलकर, डटकर, बढकर, खेल खिलाडी खेल
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल सभी अपनाएंगे,जनमानस तक पहुचाएंगे,
विजयपताका फहराएंगे, स्वाभिमान का युग लाएंगे,
खेलो की दुनिया मे होगा SSS......SSS,
खेलो की दुनिया मे होगा प्रथम हमारा खेल (१)
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
उछले कूदे, जल मे तैरे, बाधाओं के पथ पर दौडे,
योग कबड्डी खोखो खेले,वजनो से ताकत को तौले,
धनुषबाण से तीर साधेंगे SSS......SSS
धनुषबाण से तीर साधेंगे, एकलव्य का मेल (२)
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
शक्त भुजा हो, सशक्त कंधे,आंधी मे भी अविरल गति हो,
रग रग मे हो प्यार देश का,खुली निगाहें, अविचल मति हो,
तन मे बल हो, मन निर्मल हो SSS......SSS
तन मे बल हो, मन निर्मल हो, बाकि हो जो खेल (३)
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
हार हुई तो मत घबराना, विजय मिली तो मत इतराना,
वृत्ति खिलाडी भूल ना जाना,आज रुके तो कल बढ़ जाना,
विजय पराजय जो भी आएं SSS......SSS
विजय पराजय जो भी आएं,निर्भय हो कर खेल (४)
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेल खिलाडी खेल, खेल खिलाडी खेल ।।
खेलो मे है अद्‌भुत क्षमता, बढती है आपस मे ममता,
अटूट साहस, धीरज क्षमता, संस्कारो का रूप निखरता,
इन्हीं गुणो से जीत सकेंगे SSS......SSS
इन्हीं गुणो से जीत सकेंगे,जीवन भर के खेल (५)